IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उषा प्रियंवदा और मेहरून्निसा परवेज की कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन

('वापसी' तथा 'उसका घर' के संदर्भ में)

प्रा.डॉ.सौ.सविता शिवलिंग मेनकुदळे
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी विभाग)
छत्रपति शिवाजी कॉलेज, सातारा
(स्वायत्त) महाराष्ट्र

शोध सारांश -:

तुलनात्मक अध्ययन को साहित्य अध्ययन जैसी महत्वपूर्ण विधा में स्थान मिला है । दो विषय वस्तुओं में अधिक समानता हो या वह विषयवस्तुएँ एक सूत्र में बंधी हुई हो तो तुलनात्मक अध्ययन सफल माना जाएगा । तुलना में समानता या एकरूपता को अधिक बल मिलना चाहिए । तुलनात्मक अध्ययन स्थूल या सूक्ष्म रूप में किया जाना चाहिए । स्थूल रूप याने भिन्न साहित्यों या एक ही साहित्य के दो युगों, दो प्रवृत्तियों के वर्ण्य विषय का उल्लेख किया जा सकता है । साहित्य द्वारा प्रकट होने वाले मानव निर्मित उच्चतर मूल्यों, विचारधाराओं, चिंतन प्रणालियों और अनुभूतियों की अभिव्यक्ति पर तुलनात्मक अध्ययन द्वारा प्रकाश डाला जा सकता है । 'वापसी' और 'उसका घर' कहानियों में एक समानता का सूत्र मिलता है कि दोनों कहानियाँ पारिवारिक होने के साथ-साथ अकेलेपन की समस्या से संबंधित हैं। महानगर, नगर और कस्बों में इन दिनों अकेलेपन की समस्या तेजी से उभर रही है । संयुक्त परिवारों की जगह एकल परिवारों ने ले ली है । उसके अनेक परिणाम समाज में देखने को मिलते हैं । उसमें से एक है अकेलेपन का एहसास बढ़ना । इस अकेलेपन के मूल में कई कारण कार्य कर रहे हैं । इस अर्थकेंद्रित समाज व्यवस्था में व्यक्ति की ओर केवल आर्थिक उत्पादन के यंत्र के रूप में देखा जाता है । संपत्ति लाने की उसकी क्षमता जैसे ही खत्म हो जाती है, घर में उसकी उपेक्षा शुरू हो जाती है । इन विभिन्न कारणों से उभरती इस समस्या को लेखिकाओं ने बड़ी ही प्रामाणिकता और यथार्थता से देखा है, विवेचित किया है ।

Keywords -: तुलनात्मक, अकेलापन, आधुनिकीकरण, समाज, उपेक्षित जीवन, मानव-मूल्य, बुढ़ापा, परिवार, आत्मकेंद्रित ।

प्रस्तावना -:

तुलनात्मक साहित्य अध्ययन यह अध्ययन की एक नई शाखा है । तुलनात्मक साहित्य में तुलना आधारभूत है । एक से अधिक भाषाओं के साहित्य कृतियों के साम्य, वैषम्य तथा प्रभाव की खोज करते हुए की जाने वाली समीक्षा याने तुलनात्मक अध्ययन है । वैसे ही दो और दो से अधिक भिन्न भाषिक समाज के साहित्यिक संबंधों के आदान-प्रदान का अध्ययन इसमें समाविष्ट रहता है । एक साहित्य कृति का उत्तम ज्ञान होने के लिए दूसरी साहित्य कृति की भाषा और साहित्य प्रवाह का गहरा ज्ञान होना जरूरी है , इस वजह से

साहित्य संबंधी अपना ज्ञान बढ़ता है । मानवीय गुणों को विकसित करने तथा ज्ञान प्राप्ति के लिए मनुष्य में होने वाली तुलना करने की प्रवृत्ति कारण बन जाती है । तुलनात्मक अध्ययन में तुलना एक महत्वपूर्ण साधन है । दो भाषा-भाषी साहित्यिकों को के विचार समझ लेने के लिए तुलनात्मक अध्ययन की प्रविधि को समझ लेना जरूरी होता है । तुलनात्मक अध्ययन में तुलना ही आधारभूत हो सकती है । तुलनात्मक अध्ययन करने से ज्ञान का विस्तार होता है । तुलनात्मक अध्ययन से मनुष्य अपने राज्य, देश, भाषा और काल के बंधनों को पार कर समस्त विश्व के उच्चतर साहित्य का आस्वाद ले सकता है ।मानव मूल्यों को परखने लगता है ।

तुलना से तात्पर्य :-

तुलनात्मक अध्ययन ज्ञान ग्रहण करने की एक पद्धति है । श्रेष्ठता और कनिष्ठता तुलनात्मकता का वैशिष्ट्य नहीं है । तुलना मनुष्य के अभिव्यक्ति की स्वाभाविक स्थिति होती है । मूलतः अंग्रेजी साहित्य से तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का प्रारंभ माना जाता है । मनुष्य जब एक दूसरे के देश में विचरण करने लगा सबसे तुलनात्मक साहित्य अध्ययन का प्रारंभ हुआ । सन 1907 में रविंद्र नाथ टैगोर जी ने भारतीय संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की आवश्यकता का पुरस्कार किया और उससे ही तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की दिशा और स्थान शोधकर्ताओं के लिए स्पष्ट हुआ । चंद्रशेखर जहागिरदार के मतानुसार " तुलनात्मक साहित्य अध्ययन में समाहित होने वाले प्रमुख संकल्पनात्मक मुद्दे याने तुलनात्मक साहित्य की व्याख्या और व्याप्ति, आशय सूत्र, सिद्धांत, प्रभाव, स्वीकार, पुनरुज्जीवन, साहित्य प्रकार, काल खंड, अनुवाद मीमांसा, संरचना और शैली है । इन सारी संकल्पनाओं की रचना भारतीय प्रस्तुति के संदर्भ में तात्विक और उपयोजित स्थिति पर जितने स्वरूप में होगी उतना तुलनात्मक साहित्य अध्ययन सच्चे अर्थ में भारतीय सिद्ध होगा ।"1 तुलनात्मक साहित्य अध्ययन से विकसित साहित्य प्रभाव के अध्ययन को निश्चित स्वरूप प्राप्त होगा । इसलिए इस तुलनात्मक साहित्य अध्ययन को शोध कार्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । तुलनात्मक अध्ययन का महत्व निश्चित ही निर्विवाद है ।

आज के युग में मानव समाज के क्रमिक विकास में विभिन्न सामाजिक परिस्थिति से गुजर रहा है । अपने देश काल, भाषा एवं साहित्य के बंधनों को पार कर विश्व साहित्य के माध्यम से अपने सार्वभौमिक एवं चिरंतन स्वरूप का परिचय देता रहा है । तुलनात्मक अध्ययन के माध्यम से विभिन्न भाषा शैली, राष्ट्र तथा उसकी संस्कृति आदि का अध्ययन कर सकते हैं । अपने परिवेश या एक सीमित दायरे से निकलकर समाज एवं राष्ट्र के व्यापक धरातल पर पहुंच सकते हैं । तुलनात्मक अध्ययन के जरिए किसी श्रेष्ठ कृति को देखते या परखते हैं । डॉ. इंद्रनाथ चौधरी लिखते हैं कि, " तुलनात्मक साहित्य विभिन्न साहित्य का अध्ययन है तथा साहित्य के साथ-साथ प्रतीति एवं ज्ञान के दूसरे क्षेत्रों का भी तुलनात्मक अध्ययन है ।"2 तुलनात्मक साहित्य अध्ययन की दृष्टि से यहाँ उषा प्रियंवदा की 'वापसी' और मेहरून्निसा परवेज की 'उसका घर' कहानियों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत है ।

'वापसी' :-

'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू बरसों तक स्टेशन पर नौकरी करते रहे हैं । उनके हृदय में परिवार के लिए प्रेम है । परंतु जब रिटायर होकर वे घर आते हैं तो स्नेहमयी पत्नी के स्थान पर उन्हें एक ऐसी प्रौढ़ा के दर्शन होते है जो गृहस्थी में रम चुकी है । जिसके लिए बेटे-बेटी की ममता ही सब कुछ है । इस पत्नी को अपने बूढ़े पति का एहसास नहीं है । गजाधर बाबू ने जिंदगीभर खपकर बच्चों की पढ़ाई की है, दो बच्चों की शादी की है । शहर में मकान बनवा लिया है । लेकिन अपने ही घर में गजाधर बाबू का एक चारपाई के सिवा कहीं भी अस्तित्व नहीं है । वह चारपाई सुविधानुसार हिलाई जाती है । परिवार में हर कोई अपनी मर्जी से रहता है । घर में जवान बेटी है उसे कोई बंधन नहीं । गजाधर बाबू यदि उस पर मर्यादा डालने की कोशिश करते हैं, तो वह रूठ जाती है ।

अमर और नरेंद्र, अमर की पत्नी आदि की भी स्थिति ऐसी ही है । उन्हें गजाधर बाबू के बंधन अच्छे नहीं लगते । कभी-कभी पत्नी भी कहती, "ठीक ही है, आप बीच में न पड़ा कीजिए । बच्चे बड़े हो गए हैं, हमारा जो कर्तव्य था, कर रहे हैं । पढ़ा रहे हैं, शादी कर देंगे ।"3 गजाधर बाबू का हृदय

अपनी संतान से मान-सम्मान ही नहीं स्नेह की अपेक्षा रखता है । परंतु उसका दुर्भाग्य यह है कि, उन्हें न तो बेटे से स्नेह मिल पाता है न बेटी से । घर- गृहस्थी के संबंध में उनका कोई स्वामित्व मानता है, न उनके अपनत्व को समझता है । उनकी सुख-सुविधा की कोई चिंता नहीं करता । अनुभव करते हैं कि वह पत्नी और बच्चों के लिए केवल धनोपार्जन के निमित्त मात्र हैं । जिस व्यक्ति के अस्तित्व से पत्नी मांग में सिंदूर डालने के अधिकारिणी है वह भी गजाधर बाबू को नजरअंदाज कर देती है ।

गजाधर बाबू की सारी खुशी एक गहरी उदासीनता में डूब जाती है । अचानक में निश्चय करते हैं कि, अब घर की किसी भी बात में दखल न देंगे । वे बिना किसी भूमिका के पत्नी को कहते हैं, " मुझे सेठ रामजीमल की चीनी मिल में नौकरी मिल गई है । खाली बैठे रहने से तो चार पैसे घर में आए, वही अच्छा है । उन्होंने तो पहले ही कहा था, पर मैंने ही मना कर दिया था । मैंने सोचा था कि, बरसों तुम सबसे अलग रहने के बाद अवकाश पाकर परिवार के साथ रहूँगा । खैर परसों जाना है । तुम भी चलोगी ?"4 लेकिन पत्नी गृहस्थी में अटकी हुई है । वह जाने को तैयार नहीं होती । इसलिए गजाधर बाबू घरवालों से उदास होकर नौकरी करने वापस जाते हैं ।

'उसका घर' :-

'उसका घर' कहानी के माध्यम से मेहरून्निसा परवेज ने समाज के यथार्थ को चित्रित करने की कोशिश की है । साथ ही वैज्ञानिक प्रगति, आधुनिकीकरण, छोटे परिवार, उससे उत्पन्न व्यक्तिवादी भावना, आर्थिक सुरक्षितता अभी संयुक्त परिणामों से उभरी हुई समस्या को मध्य नजर रखते हुए 'उसका घर' कहानी में पुरुष के अकेलेपन के दर्द को तथा बीमारी और बुढ़ापे के कारण उपेक्षित जीवन को चित्रित किया है ।

'उसका घर' कहानी में चित्रित बापू वह पिता है जिसने घर-घर पानी भर कर पेट काटकर पेशगी माँग-माँग कर अपने लड़कों की फीस भरी है । उन्हें किताबें लाकर दी है । बापू एक स्वाभिमानी व्यक्ति के रूप में कहानी में चित्रित है । वह स्कूल से फीस और किताबें नहीं लेता । 'उसका घर' कहानी में चित्रित बापू की यह मान्यता थी कि, " दु:ख में पढ़ने वाले ही तो अच्छे बनते हैं, दूसरों के सहारे पढ़ने वाले निकम्मे बन जाते हैं ।"5 इसलिए जी जान से हाड़ तोड़ मेहनत करके बच्चों को पढ़ाते हैं । आज बच्चे नौकरी पर लगे हैं, बहुएँ आयी है । लेकिन बापू की बुढ़ापे की अवस्था बिल्कुल कठिन हो गई है । बुढ़ापे में वे बीमार हो गए हैं । पर अब उनकी देखभाल कोई ठीक ढंग से नहीं करता । उनकी अपनी पत्नी कल्लो भी उन्हें दूर से खाना डालती है । तो बेटे, बेटी और बहू का तो देखभाल का प्रश्न ही नहीं उठता । पत्नी कल्लो चना खाने पर उन्हें डाँटती है, " जरा मेरी इज्जत का तो ख्याल किया करो, अपनी अधूरी अंगुलियों से क्या चना चाट रहे थे ।"6 बेटी भी उन्हें बात सुनाती है । कहती है, " गुस्सा तो यूं कर रहे हो बाबू, जैसे हमें कमा कर खिला रहे हो ।"7 बेटा भी पिता से गुस्सा करता है । बहू चाय, खाना वक्त पर नहीं देती । पर पिता बहू के लिए चिंतित है । भगवान से प्रार्थना करते हैं, भगवान ! बड़ी बहू को बेटा दे । मँझली बहू का बेटा देखने के लिए भी वे उत्सुक रहते थे । चोरी से ही सही पोते को देखने निकलते हैं, पर बहू के चादर खींचने से पिता डर जाते हैं और बुझे मन से लौटते हैं ।

'वापसी' और 'उसका घर' कहानियों की तुलना :-

साम्य :-

1. उषा प्रियंवदा और मेहरून्निसा परवेज़ दोनों भी समकालीन कहानी लेखिकाओं में अग्रणी हैं । इनकी कहानियों में शहरी परिवारों के बड़े ही अनुभूतिप्रवण चित्र मिलते हैं । आधुनिक जीवन की उदासी, अकेलेपन,ऊब आदि का अंकन करके इन्होंने गहरे यथार्थबोध का परिचय दिया है । साथ ही परिवर्तित मानवीय संबंध, विवाह समस्या, आधुनिक भारतीय नारी की समस्याएँ आदि का चित्रण मिलता है ।

2. 'वापसी' और 'उसका घर' दोनों कहानियों का विषय पारिवारिक धरातल पर है ।

3. 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू 35 साल की नौकरी के कारण परिवार वालों के साथ न रह सकने की वजह से अकेलेपन से ग्रस्त थे ।अब सेवा अवकाश के पश्चात परिवार के साथ रहने के सपने रचते हुए खुश हो जाते हैं मगर परिवार वाले उन्हें अपने में सम्मिलित नहीं करते । 'उसका घर' कहानी के बापू भी जब तक कमाते हैं तब तक उन्हें अकेलेपन का एहसास नहीं होता क्योंकि वे अपने कर्तव्य पालन में जुटे रहते हैं । लेकिन बुढ़ापे की अवस्था में बीमारी के कारण अकेलेपन की और उपेक्षित जिंदगी जीनी पड़ती है ।

4. 'वापसी' और 'उसका घर' दोनों में भी मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण मिलता है । गजाधर बाबू और बापू दोनों भी अपने-अपने परिवारों की अच्छी गुजारिश के लिए दिन-रात हाड़ तोड़ मेहनत करते हैं ।

5. 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू को अपने ही घर में कोई स्थान नहीं है । परिवार का स्वामित्व वे करना चाहते हैं लेकिन हर कोई अपनी मर्जी से जीना चाहता है । अमर अलग रहने की सोचता है । 'उसका घर' के बापू ने परिवार के लिए जिंदगी भर जो कष्ट उठाए हैं उसे याद न रखते हुए परिवार के मुखिया को ही बुढ़ापे की अवस्था में भूखा रहना पड़ता है । बीमारी की अवस्था में भी 'गुस्सा तो यूं कर रहे हो बाबू, जैसे हमें कमा कर खिला रहे हो ।' वैसे ताने सुनने पड़ते हैं । पारिवारिक विघटन की समस्या दोनों कहानियों में चित्रित है ।

6. 'वापसी' और 'उसका घर' दोनों कहानियों में अर्थकेंद्रित व्यवस्था दिखाई देती है । जब तक दोनों पिता पैसा कमाते हैं तब तक परिवार उनसे संबंध रखता है और जब वे कमाते नहीं, असहाय हो जाते हैं तब उनका साथ नहीं देते । भौतिक जीवन दृष्टि, घोर व्यक्तिवादी दर्शन और बढ़ती हुई महँगाई के कारण परिवारों में अर्थकेंद्रित व्यवस्था आ चुकी है ।

7. भारतीय संस्कृति में विवाह एक बंधन माना जाता है । सात फेरे लेते वक्त मरते दम तक एक दूसरे का साथ देने का वचन दिया जाता है । लेकिन 'वापसी' और 'उसका घर' दोनों कहानियों में चित्रित पत्नियाँ पति की बुढ़ापे की अवस्था में छोड़ती है ।

8. 'वापसी' और 'उसका घर' दोनों भी सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने वाली कहानियाँ हैं ।

9. दोनों कहानियों के कथोपकथन सुगठित एवं सुचारू ढंग के हैं जो कहानी में चित्रित घटना प्रसंगों को उजागर करने में सहायक बन पड़े हैं ।

10. दोनों कहानियों की भाषा एवं कथन शैली भावुकता तथा अलंकरण से रहित है । विषय वस्तु के प्रति तटस्थता है ।

वैषम्य :-

1. 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू को परिवार में सम्मिलित नहीं किया जाता तो वे फिर से नौकरी करने जाते हैं । लेकिन 'उसका घर' के बापू को बुढ़ापा और बीमारी के कारण उपेक्षित जीवन जीते हुए उसी घर में रहना पड़ता है ।

2. 'वापसी' के गजाधर बाबू रेलवे स्टेशन पर नौकरी करके अपने परिवार का लालन पालन करते हैं, बच्चों को पढ़ाते हैं । लेकिन 'उसका घर' के बापू घर-घर में पानी भरकर, पेट काटकर पेशगी की मांग करके लड़कों की फीस भरते हैं और बच्चों को पढ़ाते हैं ।

3. 'वापसी' के गजाधर बाबू बूढ़े जरूर हो गए हैं लेकिन शारीरिक तंदुरुस्ती की वजह से स्वाभिमानी जिंदगी जीने का विकल्प उनके पास है । लेकिन 'उसका घर' के बापू की स्थिति बुढ़ापा और बीमारी के कारण परावलंबी बन चुकी है, उन्हें परिवार में उपेक्षित, मजबूर जीवन जीना पड़ता है ।

4. 'वापसी' कहानी के गजाधर बाबू को 35 साल की नौकरी में परिवार वालों से ज्यादा गनेशी जैसे नौकर से प्यार, अपनापन मिलता है । लेकिन उसका घर के बापू की सेवा करने वाला, प्यार और अपनापन देने वाला अन्य कोई भी पात्र चित्रित नहीं किया गया है । पेंशनर और मजदूर की बुढ़ापे की अवस्था में भी अंतर दिखाई देता है । यदि बापू के पास पेंशन होती यह जमा पूँजी होती, तो वे नौकर रख कर अपनी सेवा करवा सकते थे ।

निष्कर्ष :-

अर्थ केंद्रित समाज व्यवस्था में जैसे संबंधों में बदलाव आ जाता है । ठीक उसी प्रकार यह व्यवस्था व्यक्ति की उपेक्षा तब शुरु कर देती है जब उसका अर्थ मूल्य कम या खत्म होने लगता है । महानगरीय या कस्बाई संस्कृति में यह स्थिति धीरे-धीरे क्यों न हो, उभर रही है । गजाधर बाबू की वापसी भविष्यकालीन परिवार व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगाती है । एक वह काल था जब पिता को घर के सबसे सम्मानित व्यक्ति के रूप में स्वीकार किया जाता था । अंतिम सांस तक परिवार के सभी सदस्य उनकी सेवा करना अपना धर्म और नैतिक जिम्मेदारी मानते थे । घर के बड़े, बहुएँ सब वृद्धों के प्रति आदरभाव रखा करते थे । अपवादात्मक रूप में यह स्थिति कुछ परिवारों में आज भी हो सकती है । परंतु निम्न और मध्यवर्गीय घरों में साथ ही साथ उच्च वर्गों में भी बुढ़ापा और बुढ़ापे की बीमारी शाप बन रही है ।

संदर्भ :-

1. जहागिरदार चंद्रशेखर (संपा.) - तौलनिक साहित्याभ्यास तत्वे आणि दिशा, सौरभ प्रकाशन, कोल्हापुर, प्र.सं.1992,पृ. 13
2. डॉ चौधरी इंद्रनाथ, तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, दक्षिण भारत प्रचार सभा, मद्रास, प्रथम संस्करण 1983, पृ. 5
3. अवस्थी देवीशंकर (संपा.) - कहानी विविधा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1991, पृ.169
4. अवस्थी देवीशंकर (संपा.) - कहानी विविधा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं.1991, पृ.170-171
5. परवेज मेहरून्निसा - आदम और हव्वा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्र.सं.1972, पृ.71
6. परवेज मेहरून्निसा - आदम और हव्वा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दरियागंज, नई दिल्ली-2, प्र.सं.1972, पृ.70
7. वही - पृ.70